chos dbyings bstod pa\_ktm\_1997\_rfu\_talk\_4\_metadata

created by: Peter Schaffranek started: 12 FEB 2013 last changes: 09 APR 2013 total pages: 7

क्र्य.ग्री.र्न्युट्य.श्र.पर्स्र.रा

		chos dbyings bstod pa_ktm_1997_rfu_talk_4_metadata
		Start Talk 4 of 5
Tib	00:00:00	
Eng	00:00:10	
Tib	00:00:25	
Eng	00:01:32	About Milarepa's song: "Equality and Seven Things to Forget". Milarepa being called a nihilist.
Tib	00:03:06	तीर तर्रेयो शु.ता.स्य.तर्. भवीस तर्या भक्षा क्षेत्र क्षेत्र महेर.त. मर्थेय वर व्या मिर्चेत्र राज्ञ नेया हुंचाया द्या निर्माण वर्षा निर्माण वर्षा निर्माण वर्षा निर्माण वर्षा निर्माण वर्षा
		હ્ય≃
		र्त्ते (पद्माप्त) मेश प्राप्त प्राप्त मानिका स्थाप मानिका स्थित प्राप्त मानिका स्थाप स्थाप मानिका स्थाप मानिका स्थाप मानिका स्थाप मानिका स्थाप मानिका स्थाप मानिका स्थाप स्याप स्थाप स्य
		प्टरा.तपु.ला.चेबा ला.चेबा ट्रे.शबर.बीबा ट्र्ये.तपूर्ट.ता.पुटी ट्रे.यबा.स्ट.बोथ्या.पटीबा.मी.बुरा.बीबा.धे.यटा.बोथा.कुथा.बीबा.कुथा.बीबा.बी.बीबा.बीबा.बी.बीबा.बीबा.बीबा.ब
		चीच.त.त.र्ट्र.त.ऱ्री जचराची.बाज्य.क्य.क्य.क्य.क्य.क्य.क्य.क्य.क्य.क्य.क
		राहेत्।
Eng	00:03:58	quote: Milarepa: "When I realize wisdom beyond thought" "When I realize the result's inside
		of me."
		The two statements "wisdom beyond thought" and "the result is inside me" are in accordance
		with the zhentong view. The reason for that is, that in the zhentong tradition the final and
		absolute truth is wisdom which is beyond [conceptual] mind. This wisdom is stated to be the
		highest truth. "The result is inside me" states that inside me is the true nature of mind, the
		spontaneously established three kayas. The result is not to be obtained from somewhere else.
		This also accords with the zhentong view. It actually accords with all three: zhentong,
		mahamudra and dzogchen.
Tib	00:05:30	र्में पर्यायानेयाचेर चुँया हे में दे येथया हर येथाया पर्यायद्या पदियो नेया राज्येयाया प्रायय प्रायद्या पदि हमा प्रायय प्र
		८न्' <u>हे</u> 'क्' न' अंशुक्' स्।
Eng	00:05:48	
Tib	00:06:24	
Eng	00:06:32	
Tib	00:07:00	
Eng	00:07:35	
Tib	00:08:10	चुदःकुवःदेदःवरःश्चेःवर्श्वश्चिदः। क्रेव्ययःवरुदः ७१
Eng	00:09:04	vers 61
Tib	00:09:47	ळेवाहा ५० त्योवानम्
Eng	00:10:25	vers 61 explanation
Tib	00:11:37	ह्यैयः महतः होना सः क्रेक् संदिः सुनायः या सक्षयः यः महत्यः अदः मासुक्षः हेनायः यः क्रेनायः स्वयायः स्वयः यत्यायः सहयः सुका दर्गेत् स्वयः सहयः सुका दर्गेतः स्वयः सहयः सुका स्वयः
		र्ह् हे चेना सदे खनायाचा के महिना खया नहेना चाया यह माया सम्प्राचित स्थान होना चाया है स्थान हेना चाया है स्थान होना चाया चाया चाया चाया चाया चाया चाया चा

		हे 'देट 'र्लें द' अन्देत्। नाट 'र्के क' धुक्त क' दें आर्के द आर्के दा को कार्यका समान्य दाना स्वर्थ हो ।
Eng	00:11:58	generally it is stated in the mahayana system, that the accumulation of merit during three
		countless aeons is necessary in order to become a buddha. In this way it explains
		enlightenment as being far away. In the vajrayana system, buddhahood is explained as being
		near, obtainable during one lifetime and in one physical embodiment. These explanations are
		nothing else but depending on conceptual [interpretations]. In the true nature there is no near
		or far. The reason for that is, that there [never] existed any stains. It is primordially pure.
Tib	00:12:53	લી દાવડુંથી નિર્ણય, ટીવા, ક્ષેદ, માત્રુ ફી નિર્ણય, ટીવા, દુવા, કું. માલુંથ, કૃવા, ક્ષેટ, માત્રું
		લાયા કુના શ્રેષ્ટા ના
		विह्न चुं क्या केंग निविद्य सुं कुन क्षे अदः नग सर येथया चुं गवया खुगाय विन् गाया चने गायेगया क्षेट चें यदिव नु विद्या सुं कुन के नु
Eng	00:13:40	the six sense objects not appearing / is awareness of reality just as it is (vers 61 cont.)
		The six sense objects are form, sound, smell, taste and tangible objects. These six objects [seen
		as being] far away and apprehending the six sense objects, [creates the duality of] something
		perceived and a perceiver, the concept of there being something perceived and a perceiver.
		When this concept of there being something perceived and a perceiver dissolves into the
		extent of space, the unmistaken true nature of mind, clear light sugatagarbha manifests, which
		is enlightenment.
Tib	00:15:16	
Eng	00:15:33	
Tib	00:16:10	हे भूर तें अ ५८ पत्रे अ कु। के मुश्य पठ ५ ८ ०
Eng	00:16:32	vers 62
Tib	00:17:26	क्षेत्रायायहर् ५२ त्योभायन्
Eng	00:18:28	vers 62 explanation
Tib	00:18:57	
Eng	00:19:35	the lion's milk requires a special container
Tib	00:20:28	रे.पबितः क्षेत्रः र्योप्तरा गुर्था गार्थेगारा त्र्या केंग्राय उदर . ५३
Eng	00:20:45	vers 63
Tib	00:21:00	क्रेंग् रामठन्: ७३ त्यो्यामन्
Eng	00:23:08	vers 63 explanation
Tib	00:24:26	
Eng	00:24:44	
Tib	00:25:10	विंदर होट हिंदर होट प्यट द्वाप्यकाया यहना विद्युव होट यहाया होट प्याप्यका होता होता होता है
Tib	00:25:54	यद्या: दृदः यद्यां मी 'बेश' दृहें दुः यथा ।      हेर्याश' यङ्दः ' ७०
Eng	00:26:02	vers 64
Tib	00:26:17	क्रियायायहर् ७८ वर्षेवायायम्
Eng	00:28:05	vers 64 explanation
Tib	00:30:43	
Eng	00:30:55	
Tib	00:31:19	
Eng	00:31:45	
Tib	00:32:34	

Eng	00:33:00	
Tib	00:33:40	
Eng	00:33:59	
Tib	00:34:15	नाट. द्वीय:श्राट्या-क्रिया-सुव्यंत्र्या क्रिनायानच्यः ७५५
Eng	00:34:25	vers 65
Tib	00:34:51	क्रॅन्यायाचर् ५५ त्म्रोवाचन्
Eng	00:36:18	vers 65 explanation
Tib	00:38:47	
Eng	00:39:17	
Tib	00:40:23	रगादः र्ह्येन् अः र्ह्मेन् अः स्वायः प्रदर्ग व्यव्यायः प्रदर्भ व्यव्यायः प्रदर्ग व्यव्यायः प्रदर्भ व्यव्यायः प्रदर्ग व्यव्यायः प्रवित्यायः प्रदर्ग व्यव्यायः प्रदर्ग वित्यायः प्रदेश वित्यायः प्रदेश वित्यायः प्रदेश वित्यायः प्रवित्यायः प्रदेश वित्यायः प्रदेश वित्यायः प्रवित्यायः प्रव
Eng	00:40:38	vers 66
Tib	00:41:05	ळॅग्राप्तठम् ७७ वर्गेवापन्तम्
Eng	00:44:50	vers 66 explanation
Tib	00:50:02	क्रमः इससः गुरुः वः पर्दे इत् वसुसः ५६ । क्रेमसः पठरः ५०
Eng	00:50:13	vers 67
Tib	00:50:28	हेंग्श <sup>-</sup> मठर्' ७० वर्गेवामन्
Eng	00:52:42	vers 67 explanation
Tib	00:57:30	
Eng	00:58:00	
Tib	00:58:55	व्ययश्र-दर-प्रकथायदिः मेश्र-स्वा-दर-। हेर्माश-प्रकर- ७५
Eng	00:59:05	vers 68
Tib	00:59:30	क्रॅन्यायायहर् ५५ त्योवायन्
		त्युट 'यदेता । बचका 'दट 'चठका 'यदे 'वेका 'रच 'दट '। बचका आवका 'या 'यदे 'क्षेचका खुः वा 'रे 'रे दा वा वा वा कि
		वामा चीता में त्या मा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षा मा बाद के के क्षेत्र क्षेत्
		बुैर वनमा आवमा सारेत्। रूट मी वनत् ईवा नर्जे दर्गमा के विद्या
		व्युट व्यन्तेन । ब्रेंन व्यम क्रम यम ब्रुटम यम् ५६ । चर्के केंग्राम व्यन्त व्यापन मुन्न व्यापन व्याप
		ૄૣૢ૿ૢૣૣૣૢૢૢૢૢૢૣૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૼૢઌ૱ઌૡ૽ૻ૱ૡ૽૽ૹૢૼૡૼૹઌૡ૽ૻૣ૽ૼ૾ૢૄઌ૽૱૱૱ૡ૽૽ૺૹ૾ૹઌ૽૽ૺૹઌૡ૽૽ૡ૽ૼૡ૽ૺઽૹઌ૽૽ૢ૾ૺ૱ૢૺ
		विट प्देचा क्रिंचरा प्राटेश महरा प्राप्त का हो। क्रिंचरा चेर चीरा हे की शत्रुव प्राप्ते चेंचरा चेरा चीरा अवव चुरा अवव जुरा सार्थे द्वारा मिट क्रिंकेर व क्रिंट क्रिंकेर केरिंट क्रिंकेर व क्रिंट क्रिंट क्रिंकेर व क्रिंट क्रिंकेर क्रिंट क्रिंकेर व क्रिंट क्रिंकेर क्रिंट क
		. युपःया रूटः यः र्कृतः र्वेट्यः केतः ये क्षेत्रः यदिः क्षप्रयः सुः दे 'चेवा चुवा यत्र तुवा या केतः ये' दर्गिवा
Eng	01:01:58	vers 68 explanation
		quote: "prajna that is joined with means" skillful means is in this case to rejoice in virtue done
		by others. Why is that so? If one can, without jealousy, wholeheartedly rejoice in the virtues
		deeds that someone else performs, then one will obtain together with that person the [equal]
		amount of spiritual merit, which is a skillful way of [accumulating merit] without effort from
		one's own side.
		quote: "aspiration prayers very pure"
		whatever dharma we do during this life depends on our present own state, being able to
		accomplish virtues activities (?) at the final stage of life and during the next life depends on

		wishing prayers. If one performs wishing prayers then one's spiritual practice will go well.
		quote: "a firm stand in power, wisdom too" power is the ability to overcome all opposites. If
		anger arises, the ability to overcome anger, if strong negative emotions arise in oneself, a
		strong power is needed to overcome those.
Tib	01:06:00	चेट-क्याग्रेशश्चर्याम् च्रिलेश हिनायान्चर्टर ५० 
Eng	01:06:17	vers 69
Tib	01:06:30	क्रॅग् <b>ष</b> 'चठर' ७० त्योव'चनर'
		વીદ તરેથી ચિદ જેવ મુજબ તૈનો જુ ચૈ. હુજા મુજબ રુવ સજબ રુટ ફ્રેનજા તતું. જાદજા ધ્રેજા છે. જાત તમે ટે. તર તરે ટે. તજા ચૈદ જેવ છે. જુજા નોળ જુલે તૃ. જુ.
		वहेंब्रस्य चुनःकुनः कुन्नेअअगम्याकेब्रस्य अवहेंब्रस्य चुनःकुनः अअगन्ययः अनः मृत्याकेब्रस्य वहेंब्रस्य चुना अन्य
Eng	01:08:00	vers 69 explanation
		quote: "to bodhicitta" I pay no homage" if one does not esteem bodhicitta, the wish to
		establish all sentien beings onto the level of a perfect buddha, if one does not hold this
		bodhicitta as being important, then one will also not pay homage to bodhisattvas. "Not to pay
		homage" means to have no esteem.
Tib	01:09:47	
Eng	01:10:00	
Tib	01:10:20	
Eng	01:10:42	
Tib	01:11:27	
Eng	01:11:38	
Tib	01:12:03	सुरःवीदःयःर्मेद्रःवःसूदःगदः। क्रेंग्यःस्टरः २००
Eng	01:12:14	vers 70
Tib	01:12:32	क्रेंग्रायठन्: ৵० त्र्योवायत्वन्:
Eng	01:12:50	vers 70 explanation
Tib	01:13:05	
Eng	01:13:21	
Tib	01:13:53	
Eng	01:14:04	
Tib	01:14:24	मुर्ज्ञ में द्राया में द्राया में के मार्था में के मार्था में कर कर के मार्थ में
Eng	01:14:58	vers 71
Tib	01:15:14	हेंग् बायहर् था व्योवायम्
Eng	01:15:57	vers 71 explanation
Tib	01:17:13	
Eng	01:17:50	
Tib	01:18:56	चिट-कुनःश्रेशश <sup>-</sup> दे,-स्य-संश्रुटश-देश  क्रुबोश-सन्दर्- ७२
Eng	01:19:08	vers 72
Tib	01:19:24	क्रेंग्रथं चरुन् : ७० वर्षे व्यापान्यन्
		તીદ.તર્નુથી 15.તાશ.કું.હુદ.તર્નીદાવદાવા કુંમ.તાયેદ.વેદ.જેવ.જુજાયોય સંચાવેદ.જેવ.જુજાયના તુંથ. તેયા તેયા કુંમ.તાયા દૂધ.
		હુતઃએઅઅ"ર્મે′ ત્ર્મેં અનુઃરેત્ અદેક"ર્ફેનઅ:તુરું વાચા છુત્ર 'ર્ઘચ'ત્દ" સદયા તુષ્ય 'ત્દ" સદયા તુષ્ય નાસુઅ"ના તુષ્ય 'ત્રા' તું 'કું વાય' તે
		चक्रेत्र'त्र्य'त्युट्' चर्म्'ग्राह्य'स'सेन् दे'न्नित्र्य'स्'र्भ्नयय'सु'र्न्त्र'न्य'युट'क्र्य'येश्य'धेत्र'चु'रेद्

		युट 'यद्देत्। । न्य मर्टेंबर क्रेन् क्रेंन्य 'बटबर कुषर इसमा क्रेन् क्रिय केर क्रेंन्य केर क्रिय केर क्रिय केर
		क्रियायात्रयाया दे.वयाक्षेयातावायादीस्थायायाक्षयायाक्षयायाच्यात्राच्यात्रयाच्याच्यात्रयाच्यायाच्यात्रयाच्यात्रयाच्यायाच्यात्रयाच्यात्रयाच्यात्रयाच्यात्रयाच्यात्रयाच्यात्रयाच्यायायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायायाच्यायायाया
		શુ:શ્રુચ:(?)વદેત:પવ:ક્ષનચ:શુ:શ્રુચ:(?)નું કેના(?) દ્વાચ:નને વવે:વનેય:નફેત:બેન:સંના કેન બેન:સંના નેત્ર:નને સામા
		શર્શ્વરા દુવઃ મુંત્ર મુંત્ર સુરા મુંત્ર નાર ત્યય ત્વીર ના ખુ. માં દુ. માર ક્યા તથીર ના ક્ષેત્ર માં સુરા ના ક્ષેય ના માં માં માં માં માં માં માં માં માં મા
		र्म्युनम्हरात् हेन्न त्रेवायान वामा प्रदुरम्हिन देशाया प्रमाया हे त्राया दुरम्हिन या देशाया स्थापा सार्वेनाया सार्वेनायाया सार्वेनायाया सार्वेनायाया सार्वेनायायाया सार्वेनायाया सार्वेनायायायायायायायायायायायायायायायायायायाय
		र्ट. चर्लुय च्रियायाचीयात्ता हे. हे. दथा ह्रियाया सीयाता चर्चाया सूचाया स्वयाया स्वयाया सीयाया सीयाया हे. हे. दथा ह्रियाया सीयाया सीयायाया सीयायाया सीयायाया सीयायाया सीयायाया सीयायाया सीयायाया सीयायाया सीयायायाया सीयायायाया सीयायायाया सीयायायायायायायायायायायायायायायायायायाया
		યા સુત્ર 'ર્શના'ના જેના'તા 'ક્ર્કેંમ'તાઢા 'ત્રોનું' તથા 'ત્રો' તથા '(?)ઢો જ્ઞેંમ'તાઢા મમ્ય '5'ના મુત્ર ના જેના 'ક્રેમ' સુદ '5' અદેત '5' મુદ્દેન
Eng	01:22:38	vers 72 explanation
		quote: "will then arise and spring from it"
		amongst the two aspects of bodhicitta that are taught in general, the relative and the absolute,
		here one needs to understand it as refering to the absolute bodhicitta. In the
		Abhisamayalamkara it says that all three, sravakas, prateykas and the perfect buddhas come
		into being based on the paramita of wisdom. In the same way the vers here seems to refer to
		absolute bodhicitta.
		absolute bourneltta.
		quote: "arhats, conditioned realizers, Buddhas too"
		conditioned realizers refers to pratyekas. They accumulate, relying on a spiritual friend,
		during hundred and more aeons spiritual merit. In their last life, when the teachings of the
		previous residing buddha have vanished and the one's of the later have not yet arisen, during
		which time the arhat monks, looking after students, (?) are in hiding (?) and when there is no
		spiritual teacher available, they rely on "their inner conditions".
		For example, sitting in a charnel ground they see bones and corpses, upon which they ponder
		in this manner: "Where did these corpses come from? How did death occur? It came about
		through birth. What is the reason for being born?" Then they contemplate the successive
		twelve links of interdependent origination and come to the conclusion that their root is
		ignorance. Asking themselves: "What is ignorance?" they come to realize that ignorance in it's
		own being is non existent, whereby, through the power of having accumulated spiritual merit
		during hundred aeons and more they realize the true nature of selflessness. Then the arhat
		proceeds on one single seat (or in one session) from the path of junction to the path of no
		more learning. [for further reading: see: ToK 6.3 Frameworks of Buddhist Philosophy, Snow
mtl.	01.07.40	Lion: 2007 p.156]
Tib	01:27:42	दे प्राचीन की मुच की प्राचीन मुच की प्राचीन की की प्राचीन की की प्राचीन की प्
Eng	01:28:51	similarly, there where two children among the eigthy for mahasiddhas, by the name of
		Tanglopa and Shinglopa. They were practicing sitting under trees and upon receiving only a
		few instructions from bypassing yogins, they were able to achieve siddhis based on the power
,1		of their predispositions from former lifes.
Tib	01:30:13	श्चार्यात्रम् स्वार्योद्धर्मा सिक्चें प्राप्त द्वारा प्राप्त स्वार्य स्वार्य देन प्राप्त स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स
		या समायपि (न्या सहया न न न न में क्षेत्रा में क्षेत्रा में न न न में क्षेत्रा में
		उद्भेष्वेशःनःष्टाशार्केशश्युःन्नदःनःतुशःयःखद्यस्यः उद्योपदःयःयानेत्रेन्द्रवशः र्थेन्द्रयात्रःयाः वद्यात्रः व्य
Eng	01:30:51	Milarepa had four female students. Palderbum, Sale Ö and Rechungma seem to have only been

		about thirteen or sixteen years old when they met him. Upon seeing him they developed
		strong faith and had an extremely strong determination to practice, whereby they finally
		entered the rainbowbody. This all points to specific powers of having practiced the dharma in
		previous lifes, wherby the predisposition of previous times were activated.
Tib	01:31:48	दे.चर्लेट. टे.चूर. जाश्चेय ह्रैंट. बट. लट. श.चेश.त. श्चेय. त.लट. श.चेश.त. वश. हुं बश.त. श.चूर. त.ल. हुं च.ल.
		ठन् भ्रेमानास्थात्रात्रम्थात्रात्रात्रात्रात्रात्रम्भात्रात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्
Eng	01:32:16	in Tibet there where quite a few who never studied oder even practiced [the teachings] and
		obtained high realization, as well as supercognitive ablitiy. They all relied upon the practices
		they performed in previous lives. Their [present achievements] arose from earlier
		predispositions.
Tib	01:32:49	ૹ૾ૢઽૻ૱ઌ૽૾૾ૡઌ૽ૺ૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱
		શ્રુપાલ કરે તુમાં આ કારણ કરે છે. કારણ કરી કરી કરી કરી કરી કરી તે કરી
		ब'केंद्र'र्थे'कगुषा
Eng	01:34:08	amongs the nyingma tertön is one called Jomo Memo, who seemingly could not even read and
		was a Yakherder. Even though she never studied or even meditated, she had supercognitive
		ablities. Since she never did any dharma nor studied, people thought of her as a demoness. In
		later times she became a big Tertön.
Tib	01:35:40	Ĕऑऒ॔ दे <sup>-</sup> दैद <sup>-</sup> केब्, महेन-अहर्ने ब्द-ॲप्
Eng	01:35:50	Jomo Memo is also mentioned in the "treasury of precious termas"
Tib	01:36:06	मैर्से लंदियों मुख
Eng	01:37:17	a story of Lotsawa Vairocana
Tib	01:38:48	
Eng	01:39:04	
Tib	01:39:22	
Eng	01:39:30	
Tib	01:39:36	
Eng	01:39:41	
Tib	01:39:47	
Eng	01:39:58	
Tib	01:40:12	
Eng	01:40:21	
Tib	01:40:42	
Eng	01:41:02	meditation instruction
Tib	01:40:56	શ્રેશશાંત્રાના કેર. ગ્રુંશ ફેંશ રદ. વાવશ કદ. તે. ફેંદ્ર ગ્રુંશ ફેંદ્ર
Eng	01:41:00	look nakedly at the mind, relaxedly resting in itself
Tib	01:41:12	इस ह्मा मार लिया दें र्सर ह्मा मायवा हिर तर 5 हिर की या हिरा
Eng	01:41:18	look at the true nature of any thought, relaxedly within clarity-emptiness
Tib	01:41:31	ब्रेट.ब्र्ट्समाट.ब्रेस.ट्र्स्स ब्रेस माया.ब्रेट.यट.टे.क्रेंट्.क्रिय.ब्रेट्री
Eng	01:41:41	look at the true nature of any negative emoton, relaxedly within clarity-emptiness
Tib	01:41:55	ब्रेक्टिंग क्षेत्र त्र देने देने क्षेत्र व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्यापत
Eng	01:42:04	when doubt arises look at the true nature, relaxedly uncontrived resting in itself

Tib	01:42:22	नक्ष नु नक्ष नु न महिश से ५ गुट । नक्ष से ५ त्र क त से ठेर नुसा हिंसा
Eng	01:42:38	even though an object of seeing and the act of seeing is nondual, within non seeing look
		nakedly
Tib	01:43:00	नर्झेश नु नर्झेश नु न निकेश से न गुटा सह न सवि (?) स न हिट स र्छे न गुरु स्ट्रेंन
Eng	01:43:16	even though an object to be meditated and the act of meditating are nondual, relax without
		clinging to action (?)
Tib	01:43:35	ું કુર્યાત્રા ત્રું કુર્યાત્રા ત્રું કુરા ત્રું ત્રું કુરા તું કુરા કુરા કુરા કુરા કુરા કુરા કુરા કુરા
Eng	01:44:14	even though there is no object to be observed and no perceiving observer, relax within non-
		observation
Tib	01:44:47	બાદ ત્રે લ્વેંદ છેત્ર લુન ગુન છેત્રા અર્વેદ વર વલ્લ મે કે લેંદ્ર છેત્ર લેંદ્રા
		<b>ब्रॅन</b> -क्रीश-ब्र्रिन-सम-पर्नेन-सपी:क्रा-क्रीन-ब्र्रिन/में।
		ध्यट:यम:बेम:ब्रैश:हे:द्वश:र्हेग
Eng	01:45:12	if you have the desire to relax, relax looking at that thought (?)
Tib	01:45:48	र्हें ५ 'चु र्हें ५ 'चु ५ 'घ' न र्डे थ 'घम  अध्रभ 'छे ५ 'द ६ '५ '-द न न मा न न न न न न न न न न न न न न न न
		ૄર્કેન-ઌ૿ૄ૱૾ૢ૽ૼ૱૱ૡ૾ૢૼ૱ઌ૿૽ૢ૽ૼ૱ઌ૾ૻ૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱
Eng	01:46:10	without fabricating something to relax into and an act of relaxing, settle within equality
	01:46:26	End Talk 4 of 5
		created: PSC 12 FEB 2013
		last changes: PSC 09 APR 2013